Dr. Nutisri Dubey
(Assistant Professor, H. D. Jain College, Ara)
U.G IV Sem, MJC-05 (Western Philosophy)

Berkeley: 'Subjective Idealism'

(आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद)

अनुभववादी दार्शनिक जार्ज बर्कले ने जड़वाद का खण्डन करते हुए अपने प्रत्ययवाद की स्थापना की है। उसके अनुसार ज्ञाता (आत्मा) और ज्ञेय (प्रत्यय) के अतिरिक्त कोई जड़वस्तु सत् नहीं है क्योंकि जो अनुभव का विषय है, केवल वही सत् हो सकता है। अनुभव के विषय प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों का अनुभव करने वाला आत्मा है। इस प्रकार आत्मा और ज्ञान के विषय प्रत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु सत् नहीं है। यहाँ तक कि ईश्वर भी एक परमात्मा या अनन्त मन (Infinite mind) है। प्रत्यय स्वरूपतः अभौतिक (Immaterial) हैं। लॉक के प्रत्यय तो बाह्य वस्तुओं के मूलगुणों के प्रतिबिम्ब या प्रतिनिधि थे। किन्तु बर्कले का प्रत्यय आत्मनिष्ठ (Subjective) है। वे प्रत्यय न तो बाह्य वस्तु के प्रतिबिम्ब हैं और न वस्तुनिष्ठ हैं।

क्योंकि वाह्य वस्तुओं की कोई सत्ता नहीं है। इस सिद्धान्त को पुष्टि बर्कले के 'सत्ता दृश्यता है' (Esse est percipi) अथवा 'सत्ता अनुभवमूलक है' सिद्धान्त से होती है। बर्कले के अनुसार किसी वस्तु के अस्तित्वयुक्त होने का अर्थ उसका अनुभव का विषय अर्थात् दृश्य होना है।

आत्मा के बिना वस्तुओं की सत्ता नहीं हो सकती है। जब तक वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव न हो, तब तक उसकी सत्ता के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता है। बाह्य वस्तुएँ (जैसे – मेज, कुर्सी, घट, सेब आदि) हमारे मन के आन्तरिक प्रत्यय हैं। बर्कले कहता है – "कोई चीज सुगंधित है, का अर्थ है कि वह सूँघी गयी। वहाँ एक ध्वनि है, का अर्थ है कि वह सुनी गयी। वहाँ एक रूप या रंग है का अर्थ यह है कि वह स्पर्श या चाक्षुष संवेदन का विषय है।"

आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के अनुसार आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त किसी भौतिक वस्तु की सत्ता नहीं है। अतः बर्कले को अहंमात्रवादी (Solipsist) कहा जाता है। बर्कले के अनुसार किसी वस्तु की सत्ता और उसकी दृश्यता में अभेद संबंध है। यह असंभव है कि किसी

वस्तु की सत्ता हो और हम उसका अनुभव न करते हों। यह अवश्य है कि जब वस्तु का प्रत्यक्ष मुझे नहीं होता है तो अन्य लोगों (आत्माओं) को उसका प्रत्यक्ष होता रहता है। यदि अन्य लोगों को भी वस्तु (जैसे कमरे में रखी हुई मेज) का अनुभव नहीं हो रहा है, तो उसका अनुभव ईश्वर को सदैव होता रहता है। बर्कले ज्ञाता आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने के साथ-साथ ईश्वर और अन्य आत्माओं को भी स्वीकार करता है।

बर्कले के अनुसार प्रत्ययों के लिए बाह्य वस्तुओं का होना आवश्यक नहीं है। कुछ प्रत्ययों की रचना हमारा मन स्वयं कर लेता है, जैसे- स्वप्न के प्रत्यय, भ्रम एवं विभ्रम के प्रत्यय आदि। हम स्वप्न में जिन वस्तुओं को बहुत दूरी पर स्थित देखते हैं, उनका अस्तित्व मन के बाहर नहीं होता है। वास्तव में वे मन में ही स्थित होते हैं। इससे स्पष्ट है कि इन प्रत्ययों की उत्पत्ति के लिए बाह्य वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती है।

बर्कले का प्रत्ययवाद अपने प्रारम्भकाल से ही विवादास्पद रहा है। अनेक आलोचकों ने इस

सिद्धान्त की कटु आलोचना की है। आलोचकों का कहना है कि यदि सभी वाह्य वस्तुएँ प्रत्यय या प्रत्ययों का संघात हैं तो क्या हम प्रत्ययों को ही खाते हैं, प्रत्ययों को ही पीते हैं, प्रत्ययों को ही पहनते हैं, प्रत्ययों में ही रहते हैं (क्या रोटी, कपड़ा और मकान आदि प्रत्ययात्मक हैं?) इत्यादि। बर्कले के अनुसार रोटी, कपड़ा और मकान आदि सीमित जीवात्माओं के मन की काल्पनिक सृष्टि नहीं हैं। उनके प्रत्यय हमारी आत्मा में ईश्वर के द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं। वस्तुओं को प्रत्यय कहने का अर्थ यह नहीं है कि वे सीमित मन की कल्पना हैं। बर्कले वस्तुओं को मानसिक प्रत्यय नहीं कहता है, बल्कि प्रत्ययों को ही वस्तु बनाता है। वस्तुएँ स्वरूपतः आध्यात्मिक हैं। उनका आधार कोई जड़ तत्व नहीं है।

सत्ता को अनुभवमूलक मानने के कारण बर्कले को 'अहंमात्रवादी', 'दृष्टिसृष्टिवादी' एवं 'आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी' कहा जाता है। बर्कले सीमित जीवात्मा के साथ-साथ ईश्वर के अस्तित्व को भी स्वीकार करता है। यह जगत्

ईश्वर की रचना है। इसके अतिरिक्त इस जगत् में अन्य जीवात्माएँ भी हैं। वह अनुभवजन्य प्रत्ययों के साथ-साथ बौद्धिक अन्तर्बोध को भी स्वीकार करता है। अन्तर्बोध के द्वारा आत्मज्ञान एवं सामान्य नियमों (जैसे - कारण-कार्य नियम एवं अन्य वैज्ञानिक सिद्धान्तों) का ज्ञान होता है। इससे स्पष्ट होता है कि बर्कले के ऊपर लगाये गये आक्षेप अतिरंजित है। उसे न तो 'अहंमात्रवादी' और न 'दृष्टिसृष्टिवादी' कहा जा सकता है। किन्तु बर्कले के विरुद्ध जो आक्षेप लगाये गये हैं उसके लिए किसी न किसी रूप में वह भी उत्तरदायी है। यह जगत् भले ही सीमित जीवात्माओं के मन के प्रत्यय न हो किन्तु यह (जगत्) ईश्वर के मन का प्रत्यय अवश्य है। बर्कले के अनुसार ईश्वर भी एक परमात्मा (Infinite mind) है। यह जगत् चाहे सीमित आत्मा के अनुभव का विषय हो अथवा ईश्वर (असीमित आत्मा) के अनुभव का विषय हो, इससे बर्कले आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के आक्षेपों से नहीं बच पाता है।